Received: Jul '25
Revised:
Accepted: Aug '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

# "बी.एड़. एवं डी. एल. एड़. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता एवं कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन"

**शोध निर्देषक :**
**डॉ. गुंजन शर्मा**
**(सहायक आचार्य)**
टांटिया विश्वविद्यालय

**शोधकर्ता :**
**पल्लवी गुप्ता**
टांटिया विश्वविद्यालय

ABSTRACT

*प्रस्तुत शोध में "बी.एड़. एवं डी. एल. एड़. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता एवं कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के श्री गंगानगर जिले के इस शोध कार्य हेतु चयनित विद्यालयों में अध्यापनरत् 600 डी. एल.एड. व बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों को वर्गीकृत क्रम मे यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि से चयनित किया गया है। "बी.एड़. एवं डी. एल. एड़. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता मापने के लिए आर. के. ओझा तथा शिक्षक कार्य सन्तुष्टि मापने के लिए डॉ. एस. पी. गुप्ता और डॉ. जे. पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में "बी.एड़. एवं डी. एल. एड़. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता एवं कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।*

Keywords:- "बी.एड़. एवं डी. एल. एड़. *प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण* प्रभाविता, कार्य सन्तुष्टि।

## प्रस्तावना :–

भारत एक ऐसा प्राचीनतम देश है जिसके पास गौरवपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है। उसके पास वेदों, उपनिषदों सहित साहित्य का विशाल भण्डार है, जो ससार में प्राचीनतम कहा जाता है, भारतीय राष्ट्र ऐसे संगठन में संलग्न है जिसके नागरिक सहृदय, प्रतिबद्ध, सहभागी और उत्पादक हों तथा जो एक प्रबुद्ध, शक्तिशाली तथा समृद्ध देश का निर्माण कर सकें। समाज के भविष्य निर्माण में शिक्षा सदा से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आयी है। इस महत्वपूर्ण कार्य को शिक्षा ने अत्यन्त प्रतियोगी सार्वभौमिक परिदृश्य के अन्तर्गत सम्पूर्ण व्यक्ति के विकास तया सामाजिक उत्थान व राष्ट्रीय विकास के काम से जोड़कर सम्पन्न करने का प्रयास किया है।

जिस प्रकार हमारे चारों तरफ कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है उसी प्रकार विद्यार्थी, विद्यालयों, पुस्तकालयों, समाज, प्रौद्योगिकी, मूल्य पद्धति, संस्कृति, अर्थव्यवस्था एवं राजनीति में भी परिवर्तन होता रहता है। धर्म, सत्ताधारी तथा प्रशासन आदि अभिधारणाओं में भी परिवर्तन होता रहता है, ऐसे परिदृश्य में अध्यापक तथा उसकी भूमिका स्थिर कैसे रह सकती है। उभरते हुए सार्वभौमिक समाज में अध्यापक की भूमिका निर्धारित करना आसान नहीं है। अध्यापक की भूमिका शिक्षा के लक्ष्यों तथा समाज की प्रमुख विचारधारा द्वारा निश्चित होती है। अतीत काल में शिक्षकों को द्विज के समान माना जाता था तथा समाज में राजा के पद को भी शिक्षक के पद से नीचे माना जाता था। इस विषय में एस. राधाकृष्णन का कथन स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है ''एक सभ्य शिक्षक धन के अभाव में भी धनी होता है। इस सम्पत्ति को विचार बैंक में जमा नहीं किया जाना चाहिए, अपितु उस प्रेम भक्ति से जो अपने छात्रों में उत्पन्न की है, वह सम्राट जिसका साम्राज्य उसके शिष्यों को कृतज्ञ और मस्तिष्क में सीमा चिन्ह से अंधित है, जिसको संसार की कोई भी शक्ति नहीं हिला सकती है और न ही जिसे अणु बम हिला सकता है।'' इसी शिक्षक के ऊपर प्राथमिक शिक्षा का पूरा दारोमदार है। शिक्षक ही छात्रों का मानसिक, शारीरिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गुणों का विकास करता है। लेकिन यह तभी संभव होता है जब शिक्षक में उच्च चारित्रिक एवं मानवीय गुण हो एवं उसमें सामाजिक एवं सांसृतिक मूल्यों का प्रवाह हो। किन्तु इन सभी के होते हुए भी शिक्षक निष्प्रभावी होता है, जव वह अपने कार्य से संतुष्ट न हो या उसका शिक्षण प्रभावी न हो अथवा उसमें मूल्यों का अभाव हो। क्योंकि वर्तमान समय में समस्त मानवतावादी लक्ष्यों में कार्य संतुष्टि, शिक्षण प्रभाविता तथा मूल्यों को सर्वोपरि लक्ष्य माना जाता है, क्योंकि इसके प्राप्ति की कामना न सिर्फ शिक्षक ही करते हैं बल्कि प्रबन्धक एवं प्रशासक में भी यह समान रूप से परिलक्षित होती है।

यदि शिक्षक अपने कार्य सम्पादन से संतुष्ट हों तो वह परिश्रम, उत्साह एवं समर्पण भाव से कार्य करता है जिससे उसका शिक्षण प्रभावी होता है, जो सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के प्रति वरदान सिद्ध हो सकती है।

## प्रस्तुत शोध का महत्व :–

भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में जहाँ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षण व्यवस्था के बीच स्पष्ट भेद देखा जाता है, वहाँ पर विभिन्न प्रकार की शिक्षक प्रशिक्षण प(तियाँ जैसे कि बी.एड. एवं डी.एल.एड. के माध्यम से प्रशिक्षित शिक्षकों के योगदान और कार्य शैली

में भी अंतर देखने को मिलता है। इन दोनों प्रकार के प्रशिक्षित शिक्षकों के पास भिन्न–भिन्न प्रशिक्षण अवधि, पाठ्यक्रम की गहराई, व्यवहारिक अनुभव, तथा वैचारिक स्तर होते हैं, जो कि सीधे तौर पर उनकी कक्षा–कक्ष की शिक्षण गुणवत्ता, नैतिक दृष्टिकोण और कार्य प्रेरणा को प्रभावित करते हैं।

बी.एड. प्रशिक्षण जहाँ अधिकतर माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को तैयार करता है, वहीं डी.एल.एड. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के लिए उपयुक्त समझा जाता है। यद्यपि दोनों का उद्देश्य शिक्षण पेशे के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करना है, लेकिन उनकी कार्यप्रणाली, शैक्षिक दृष्टिकोण, छात्रों से संवाद, मूल्य स्थापना की दृष्टि, तथा व्यावसायिक संतुष्टि के स्तरों में पर्याप्त भिन्नता हो सकती है। इस भिन्नता को केवल अनुभव या अनुमान से नहीं मापा जा सकता, इसके लिए वैज्ञानिक विधि द्वारा निष्पक्ष शोध अध्ययन की आवश्यकता होती है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में एक और महत्त्वपूर्ण समस्या यह देखी जाती है कि शिक्षक केवल एक पाठ योजनाकार या पाठदाता बनकर रह जाता है, जबकि 21वीं सदी का शिक्षक एक मार्गदर्शक, प्रेरक, सहयोगी और जीवन मूल्यों का संवाहक होना चाहिए। इस संदर्भ में शिक्षकों की मूल्य वरीयता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि किसी शिक्षक के लिए सत्यनिष्ठा, समर्पण, अनुशासन, करुणा, समानता जैसे मूल्य प्राथमिकता में नहीं हैं, तो वह अपने विद्यार्थियों में इन गुणों का समावेश नहीं कर पाएगा। वहीं दूसरी ओर, शिक्षक की कार्य संतुष्टि भी उसकी शिक्षण प्रक्रिया और छात्रों के सीखने के स्तर पर प्रभाव डालती है। असंतुष्ट शिक्षक न केवल निष्क्रियता प्रदर्शित करता है, बल्कि वह नवाचार, सह अधिगम और सहकर्मियों से सह्योग जैसे सकारात्मक व्यवहारों से भी दूर हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, वर्तमान समय में जब नई शिक्षा नीति 2020 के तहत शिक्षा व्यवस्था में बदलाव हो रहे हैं, तव शिक्षक की भूमिका और अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है। कौशल आधारित, मूल्य आधारित, प्रौद्योगिकी युक्त और छात्र केंद्रित शिक्षा प्रणाली में कार्य कर रहे शिक्षकों को मानसिक, व्यावसायिक और भावनात्मक रूप से सशक्त बनाना अनिवार्य हो गया है। ऐसे में यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि किस प्रकार का प्रशिक्षण बी. एड. या डी. एल एड. शिक्षकों को इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिक प्रभावशाली बनाता है।

प्रस्तुत शोध का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि इससे नीति निर्माताओं, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों, विद्यालय प्रबंधकों और शिक्षक स्वंय को यह समझने में सहायता मिलेगी कि कौन से कारक शिक्षण प्रभाविता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं और कौन से कारक कार्य संतुष्टि को कम कर सकते हैं। जब शिक्षक के मानसिक व भावनात्मक पक्ष का अध्ययन किया जाएगा, तव शिक्षा की गुणवत्ता में भी स्पष्ट सुधार देखने को मिलेगा। इसके अलावा, कार्य संतुष्टि एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो कार्य निष्पादन, कार्य से लगाव, समय प्रबंधन, सहकर्मी सहयोग, एवं नेतृत्व स्वीकृति जैसे कारकों पर आधारित होती है। यदि किसी शिक्षक को अपने विद्यालय में कार्य करने में संतोष नहीं है, तो उसकी उपस्थिति, अध्यापन, मूल्यांकन और विद्यालयीय गतिविधियों में सहभागिता प्रभावित होती है। यह अध्ययन इस दिशा में विशेष रूप से उपयोगी होगा कि किस प्रशिक्षण विधि से जुडे शिक्षक अपने कार्य से अधिक संतुष्ट रहते हैं और क्यों।

अतः उपर्युक्त समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट होता है कि बी.एड. और डी.एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता एवं कार्य संतुष्टि के तुलनात्मक अध्ययन की अत्यंत आवश्यकता है। यह शोध वर्तमान शिक्षण प्रणाली की जमीनी हकीकतों को सामने लाने में सहायक होगा तथा इसके निष्कर्ष शिक्षा नीति के निर्माण, शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यकमों के पुनर्गठन, विद्यालय प्रबंधन प्रणाली के परिष्करण एवं संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के गुणात्मक सुधार में योगदान देंगे। शोध के निष्कर्षो के माध्यम से यह संभावित है कि हम एक ऐसी शिक्षक संरचना की दिशा में बढ़ सकें जो न केवल शैक्षिक दृष्टि से दक्ष हो, बल्कि नैतिक रूप से सजग, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और मानसिक रूप से संतुलित हो।

## शोध कथन :–

**"बी.एड़. एवं डी. एल. एड़. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता एवं कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन"**

## शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

### डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षक–

राज्य सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान एवं निजी संस्थानों में द्वि–वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययन करने के पश्चात डी. एल. एड. प्रमाण पत्र प्राप्तकर्ता डी. एल.एड. अर्हतायुक्त शिक्षक कहलाता है। ये शिक्षक प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों को अध्ययन करवाते है। प्राथमिक शिक्षा उच्च शिक्षा का आधार है। इसलिए इस स्तर की शिक्षा के लिए उत्तम प्रशिक्षण देना अनिवार्य है। कुशल शिक्षक कुशल विद्यार्थियों का निर्माण करनें में सहायक होंगें।

### बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक –

माध्यमिक स्तर के लिए अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान खोले गये। सरकारी तथा गैर सरकारी बी.एड. विद्यालय स्थापित किए गये। पहले यह प्रशिक्षण एक वर्षीय था, परन्तु वर्तमान समय में सरकार ने इसे द्विवर्षीय कर दिया है जिससे माध्यमिक स्तर पर कुशल प्रशिक्षित

शिक्षक का चयन हो सके। प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक निश्चित चयन प्रक्रिया के द्वारा निश्चित मानकों के आधार पर चुनकर शिक्षण कार्य करते है। ये शिक्षक उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों को अध्ययन करवाते है।

## कार्य संतुष्टि

कार्यसंतुष्टि का तात्पर्य व्यावसायिक दृष्टि से किये जाने वाले कार्य के प्रति स्वयं का संतोष है। व्यावसायिक दृष्टिकोण से किये जाने वाले कार्य से प्राप्त उपलब्धि एवं उन्नति से को जो सन्तुष्टि मिलती है उसे कार्य सन्तुष्टि की संज्ञा दी जाती है।

## शिक्षण प्रभाविता

शिक्षण प्रभाविता का अर्थ है शिक्षक के प्रभावपूर्ण एवं अधिगमजन्य शिक्षण से है। एक शिक्षक के ज्ञान की गहनता, अभिव्यक्ति का तरीका तथा छात्रों की अधिगम उपलब्धि उसके शिक्षण की प्रभाविता को सुनिश्चित करते हैं। प्रस्तुत शोध में शिक्षण प्रभाविता से आशय शिक्षकों में प्रभावी एवं अधिगमजन्य शिक्षण करना है। इस शोध में शिक्षण प्रभाविता के आठ आयामों को लिया गया है।

## अध्ययन के उद्देष्य :–

(1) बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(2) बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## अध्ययन की परिकपनाएँ :–

(1) बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**न्यादर्ष** :–प्रस्तुत शोध में प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के श्री गंगानगर जिले के इस शोध कार्य हेतु चयनित विद्यालयों में अध्यापनरत् 600 डी. एल.एड. व बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों को वर्गीकृत क्रम मे यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि से चयनित किया गया है।

## शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

7. शिक्षण प्रभाविता मापनी (आर. के. ओझा)
8. शिक्षक कार्य सन्तुष्टि मापनी (डॉ. एस. पी. गुप्ता और डॉ. जे. पी. श्रीवास्तव)

## प्रदत्तों का विष्लेषण व विवेचन –

(1) बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी संख्या – 1**

| चर | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी मूल्य | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता | **300** | **24.25** | **6.306** | **0.524** | **स्वीकृत** |
| डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता | **300** | **24.51** | **5.994** | | |

व्याख्या :– परिकल्पना संख्या 1 के बी.एड. एवं डी. एल. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता के मध्यमान(2) प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी संख्या – 2**

| चर | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी मूल्य | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि | **300** | **315.97** | **21.360** | **0.431** | **स्वीकृत** |
| डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि | **300** | **316.66** | **17.684** | | |

परिकल्पना संख्या 2 के अनुसार बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि बी.एड. एवं डी. एल.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

## शैक्षिक सुझाव–

- समावेशी शिक्षा की तकनीक अपनाए, विविध पृष्ठभूमि वाले छात्रों के साथ काम करने की क्षमता विकसित कर सकते है।
- शिक्षण में नवाचार लाएँ पारंपरिक शिक्षण विधियों के साथ–साथ तकनीकी उपकरणों का प्रयोग कर सकते है।
- सकारात्मक कार्य वातावरण बनाएं व विद्यालय में सहकर्मियों व विद्यार्थियों के साथ सह्योगात्मक दृष्टिकोण अपनाएं।
- कार्य संतुष्टि को प्राथमिकता दें असंतोष के कारणों की पहचान कर प्रबंधन से संवाद कर सकते है।
- केवल पाठ्यक्रम आधारित न होकर छात्रों की जिज्ञासा, व्यवहार और रुचि पर केंद्रित शिक्षण कार्य करवाये।
- छात्र केंद्रित शिक्षण अपनाए, शिक्षण कार्य, मूल्यांकन और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों में संतुलन कर सकते है।

## भावी शोध हेतु सुझााव –

1. प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने बी.एड़. एवं डी. एल. एड़. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता, मूल्य वरीयता एवं कार्य सन्तुष्टि को ही शामिल किया है। आगामी शोध के लिए शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता को लेकर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
2. आगामी शोध के लिए महाविद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता, मूल्य वरीयता एवं कार्य सन्तुष्टि को लेकर भी शोध किया जा सकता है।
3. विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा न्यादर्श लेकर पुनः किया जा सकता है।
4. केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों अथवा हिन्दी एवं अग्रेंजी माध्यम में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता, मूल्य वरीयता एवं कार्य सन्तुष्टि को लेकर भी शोध किया जा सकता है।

## सन्दर्भ सूची


1. अंजली (1995) : ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस इन रिलेशन टू वैल्यू जॉब सैटिशफैक्शन एण्ड इमोशनल स्टेबिलिटी ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स ऑफ हिमांचल प्रदेश।'' अप्रकमाशित डॉक्टोरल डिजरटेशन एजुकेशन, हिमांचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला।
2. कपिल, एच. के. (2006), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
3. कौर, एच. (2011) जॉब स्ट्रैस एण्ड जॉब सैटिस्फेक्शन अमंग स्कूल टीचर्स : ए कोरिलेशन स्टडी, इण्टरनेशनल रैफरड रिसर्च जनरल, 3 (34), 49–50।
4. डॉ. शर्मा, वी. एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा (2004)
5. डॉ. अरोड़ा रीता, सुदेष मारवाह (2005) '' षिक्षा मनो विज्ञान एवं सांख्यिकी'' षिक्षा प्रकाषन जयपुर पृष्ठ संख्या (407–430)
6. दीक्षित, मोहित (2013). सर्व शिक्षा अभियान के प्रति पंचायती राज में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन. विद्या शोध. ए. बिलगुल एवं बेनुअल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड स्लाइड् ह्यूमनिटीज. वॉल्यूम 1(1). पृष्ठ सं0 1–6.
7. प्रवीण, दोषी (2004) ''प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण प्रभाविता को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन'' प्राइमरी शिक्षक अंक–2, अप्रैल, 2004
8. पाण्डेय, चंद्रेश (2001) पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों का उनकी कार्यक्षमता एवं कार्य–संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन, पी–एच.डी.– शिक्षाशास्त्र, वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
9. सिंह, रामपाल और शर्मा, ओ.पी. (2008), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन।
10. सुखिया, एस.पी. (1990) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।